भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंकः 1	बुधवार,26.1.2000	वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

'दूसरों के दोष देखने का जैसा आग्रह है, वैसा खुद का दोष टालने का हो तो कोई कसर रहेगी नहीं।'

इस बात पर ईसा मसीह का एक सुन्दर उदाहरण है–

एक बार एक स्त्री को दोषित ठहरा कर लोग पत्थर मार रहे थे। उस टोले को ईसु ख्रिस्त पूछने लगे कि यह क्या कर रहे हो? तो लोगों ने कहा कि **यह स्त्री दोषित है, सभी इस पापिन को मार रहे हैं।**

तब ईसु ने उन्हें समझने कहा कि–भाईयों, तुम में से जो दोषित न हो–जिसने पाप न किया हो, निर्दोष हो वह पत्थर मारे। **दोषित ही दोषित को कैसे मार सकता है? यह तो अन्याय कहा जाए।**

यह सुनकर सभी सकपका–सन्न हो गए और...... केवल **ईसु के सिवा कोई उसे दंड देने लायक रहा नहीं।**

ऐसा हमारे जीवन में भी बहुत कुछ बनता रहता है। पर, सम्पूर्ण तो एक प्रत्यक्ष गुरुहरि प.पू. स्वामिबापा ही हैं ऐसा सभी जानते हैं।

सो, हमें दूसरों को समझ देने की या सुधार देने की और इनके दोषों को टालने की अपेक्षा, हमारा जीव ब्रह्मरूप हो जाए और अक्षरधाम के दिव्यसुख का जीतेजी ही लाभ मिले ऐसी पराभक्ति करते रह कर, भगवान और उसके भक्तों के गुणगान गाकर, हम सुख-शांति आनन्द का अनुभव करें यही अंतर से गुरुजी को प्रार्थना है।

हमें सभी को प.पू. स्वामिजी ऐसा बल, प्रेरणा सद्बुद्धि दें और ऐसा निर्दोषभाव दृढ़ हो यही अभ्यर्थना !

✡'प्रसंग रंग' पुस्तक में प.पू. स्वामीबापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) ने ज्ञानवार्ता में 'अंधे ने भूत देखा' की बात करी है। हवा के कारण पत्तों की खड़खड़ाहट से हुई आवाज ने शोर शराबा फैलाया और एक अंधे ने भूत मान कर चिल्लाना शुरू किया–'भूत आया-भूत आया।'

वह सुन कर बच्चों ने भी जोर शोर से वही बात फैलाई। बात बड़ों के पास पहुँची। वहाँ से बात आगे बढ़ी और चौकीदार के पास से दीवान के पास गई व दीवान ने यह बात राजा को करी।

दीवान जैसे व्यक्ति ने बात करी, सो बात सच्ची मान कर राजा ने उस ओर का दरवाजा बंद करवाया। इससे लोगों को तकलीफ होने लगी। थोड़े दिन में कोहराम मच गया।

किसी बड़े ने इस बारे सोच कर पूछा–'अरे, कोई तलाश तो करो कि यह दरवाजे बंद क्यों हुए? पाँच समझदार व्यक्ति पूछने गए। राजा ने दीवान को पूछा, दीवान ने चौकीदार को और आखिर बच्चों को पूछा तो बच्चों ने बताया कि अंधे ने कहा था ! यह बात सुनकर सभी हंसे।'

इस बात का रहस्य समझते हुए अंत में प.पू. स्वामीबापा बोले–

'यूं अंधे ने भूत देखा ऐसा सभी वर्तते हैं। कई बार अनेक बातें सुनाई पड़ती हैं कि ये तो विद्रोह करने वाले धूर्त हैं.... इनके पास जाना नहीं, बैठना-करना नहीं। **लेकिन तलाश तो करो कि वहां क्या चल रहा है? कैसा ज्ञान है? तो ख्याल पड़ेगा। ये तो धूर्त मान कर दूर रहते हैं। अंधे ने भूत देखा ऐसी बात है।'**

श्रेयार्थी मुमुक्षु साधक को इस अलौकिक सत्संग में आने के बाद ऐसी बातों से बहुत ही सावधान रहना चाहिए। **बिना देखे, बिना जाने और बिना तलाश करे केवल उड़ती बातों को सुन कर या किसी को कुछ चुभता हो और कुछ राग-द्वेष हो–जिससे ऐसी अमहिमा की बातें फैलाई हों, वह सुनकर तत्काल निर्णय ले लेने और अभिप्राय बाँध कर दूसरों को भी बहकाना–**ऐसा गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के समय में हमारे गुरुजी ने खूब सहन किया है।

अभी भी हमारी कमजोरी कहो, विकृति कहो या हिन्दुस्तान की वह कमनसीबी कहो या हमारी विचार शून्यता के कारण सच्ची चीज ढकी रह जाती है और अर्ध सत्यों पर ही एक समाज जीता रहता है। **अंत में वे दुःखी होकर–परेशान होकर ही सच्चाई को समझते हैं।**

गुणातीत स्वरूप की पहचान कराने के लिए ही गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज बाहर निकले और शुद्ध उपासना प्रवर्ता कर भगवान के प्रगटपन का गुणातीत ज्ञान हमेशा के लिए खुल्ला किया। परन्तु जब ऐसे परम सत्यों के आधार पर जीवन जीने की शुरूआत होती है, तब अनादि काल से उसका विरोध होता ही आया है। **ऐसा परम सत्य जीवन में उतारने के लिए श्रेयार्थी साधक को उसकी कीमत भी चुकानी ही पड़ती है।** यूं ऐसी सच्ची स्वतंत्रता–सच्ची मुक्ति या जीतेजी ही एकांतिक धर्म सिद्ध करने की गुणातीत ज्ञान की यह विशिष्टता पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी, पू. कृष्णजी अदा वगैरह के उदाहरणों द्वारा जनसमुदाय में ऐसे विरोध के दौर से गुजरती होती सुनी है।

हमें भी तो गुरु के प्रताप से ऐसे कितने अनुभव प.पू. स्वामीबापा ने कराए हैं। परन्तु **ऐसे विरोध केवल चित्र में बने शेर जैसे होते हैं।** उनसे तनिक भी नहीं डरना, उदास नहीं होना, घबराना नहीं। केवल अक्षरपुरुषोत्तम की सर्वोपरि स्वरूपनिष्ठा दृढ़ करके और प.पू. स्वामीबापा के महान जीवन मंत्र '**किसी का भी दोष देखना नहीं**' के निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत के मुताबिक केवल गुणगान ही गाकर सतत् अंतर्दृष्टि करके प्रार्थना करते रहना कि हे स्वामी ! आपकी ही अनुवृत्ति के मुताबिक का हम जीवन जी पाएं ऐसे अंतर के आशीर्वाद देना....

प.पू. काकाजी महाराज

1966-1967

✡✡✡✡✡

प. पू. काकाजी के साक्षात्कार के भीतर में

दिनांक **3 फरवरी 1952** के शुभ दिन गुरुहरि ब्र. स्व. योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को गोंडल मंदिर में साक्षात्कार कराया और....काकाजी के जीवन की किताब में नवीन पृष्ठ खुला एवं **सत्संग में तो एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी युग का आरंभ हुआ।** केवल गुरु की ही प्रसन्नता के लिए पल-पल झूम रहे एक आदर्श भक्त की अभीप्सा के महायज्ञ की वह पूर्णाहूति थी और साथ ही साथ एक महान चैतन्यशिल्पी की अनुपम योजना के नव यज्ञ का शुभारंभ !

सत्संग का ही नहीं, लेकिन आध्यात्मिकता के इतिहास में मानो कोई पूर्वनिर्मित प्रसंगों की श्रृंखला की कड़ीयों का वह जोड़ान था......एक महायात्रा की वह शुरुआत थी।

जो समय के पार को पाए हैं उनके लिए भूत, भविष्य या वर्तमान जैसे परिमाण नहीं होते। कोई भी प्रसंग या घटना आकस्मिक या चमत्कारी नहीं होती। दिनांक 3-2-52 वह तो एक ऐतिहासिक पल के पकने की पहचान है। काकाजी को योगीजी महाराज का–उनमें अखंड रहे श्रीजी महाराज का सम्यक् दर्शन हुआ और गुणातीत समाज को काकाजी का दर्शन हुआ ! इस एक ही घटना से काकाजी के जीवन के कितने ही पहलु प्रकाश में आए ! उनकी कई कितनी विशिष्टिताओं की हमें पहचान हुई.....

प्रत्यक्ष की अनन्य निष्ठा–निष्ठा यानि मन की दृढ़ और निश्चयात्मक अवस्था–निशंक प्रमाणभूतता की पराकाष्ठा। जो हाँसिल करने हमारी जिन्दगीयाँ निकल जाएं और फिर भी जिसको देख तक न पाये, वह निष्ठा का प्रकाश और उमंग काकाजी के रोम-रोम में मानो जन्मजात थे। प्रत्यक्ष गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के प्रति प्रभु का भाव मानो प्रथम दर्शन से ही उनको आत्मसात था। वर्ना तो बाल्यावस्था में ही वे उनको कैसे कह सकते कि–'मैं मरने आया हूँ?' अरे, हम मरने तक में तो कई कितनी बार 'मरने जा रहा हूँ'–यूं बोल कर थोड़े ही वर्षों या महिने की तो क्या बात......अरे ! दिनभर में दो-चार मिनिट भी मर नहीं सकते। खुद की अस्मिता को भूल सकते नहीं। तनिक **हमारे 'स्व' को कोई थोड़ा-सा मरोड़े, वहां खुले मन से खुल नहीं सकते।** जबकि काकाजी तो हमेशा रहे हैं–खिलखिलाते और सदाबहार!

गुरुवचन की कीमत–'मैं वह जोगी और जोगी वह मैं'–गुरु शास्त्रीजी महाराज के यह एक ही वचन को सभी क्रिया के केन्द्र में ही नहीं, जीवन के मध्यबिन्दु मात्र भी नहीं–लेकिन वही जीवन–जोगी वही प्राण–उस कक्षा से स्वीकार कर पल-पल उनकी प्रसन्नता ही मानो खुद का कारण शरीर हो यूं उनमें वे ओतप्रोत हुए। जाग्रत में तो क्या? लेकिन नींद में भी उनका प्राण मानो शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के नाम का ही श्वासोच्छवास निकालता था ! पल-पल उनके लिए ही मानो तड़पते थे। सो ही, जब नंदाजी के चुनाव के लिए बापा ने कहा तो कुछ सोचे करे बिना सब कुछ बाजू पर रखकर समग्र सत्संग समाज के लिए गुरुभक्ति का अंतिम सीमाचिन्ह रूप प्रकाशित टार्चलाईट के समान वे शाश्वत् बन गए और..... बापा की आज्ञा में खुद का जीवन दे दिया !

जिस कार्य के साथ खुद को दूर-दूर तक कोई लेनदेन न हो, उसके लिए गुरु के वचन पर खुद का व्यापार, पैसा, अति अमूल्य समय इन सब की कुर्बानी दी......वह भी मन कचोट कर नहीं, लेकिन अहोहोभाव से ! **हम सूत्र तो बोलते हैं–'सामने आने वाले को जीवन मुक्त मानो और माथे का मुकुट मानो !' लेकिन कब पीठ फेर लेते हैं वह हम ही जानते हैं।** हमारे इस मनमाने धर्म को हम ही समझते हैं और हम ही प्रमाणित करते हैं।

हम सब सहुलियत से चल पाये ऐसा धर्म अपनाते हैं। मानव मात्र का शायद एक ही धर्म है–खुद की सहुलियत रखनी, खुद के स्वार्थ को जानना, खुद का प्रिय हो उसे संभालना। काकाजी का जीवन देखें तो समझदारी आई तब से ही उन्होंने खुद के लिए कुछ रखा नहीं.....

लोग व्यापार के लिए गुरुकृपा की इच्छा करते हैं; जबकि काका, पप्पा और कांतिकाका ने तो गुरु की कृपा के लिए व्यापार तो ठीक, लेकिन अपने परिवार व खुद की जात को भी मानो गिरवी रख दिया ! यज्ञ में आति एक बार दी जाती है। लेकिन काकाजी ने तो खुद की ही आहुति बार-बार दी। खुद की ही मिल्कत-तन की, मन की, धन की, समय की, शक्ति की, प्राण की कुर्बानी दे दी।

स्वामी सेवकभाव और विनम्रता–प्रसिद्ध संतकवि तुलसीदासजी की एक साखी है.....

'कनक तज्यो, कामिनी तज्यो, तज्यो धातु को संग,
तुलसी लघु भोजन करी, जीवे मान के संग !'

मान या बड़प्पन वह एक सूक्ष्म आहार है। लेकिन उससे तन और मन को मिलते पोषण का प्रमाण अपार है। मानवमात्र के जीवन की बहुत अच्छी प्रवृत्तिओं का मध्यबिन्दु है–मान, व्यक्तित्व या सामाजिक स्वीकृति ! दुनिया की मान्यता और उस मान्यतारूपी हवा से खुद के अहम् के गुब्बारे को वह फुलाता ही जाता है। खुद की चाहे सांस फूल जाए, परन्तु अहम्रूपी गुब्बारे को फूलाता जाता है। उस गुब्बारे का विस्तार और मोटा करने के पागलपन में वही गुब्बारे की बाहर की दीवार हर एक फूंक से पतली होती जाती है। उसका उसे ख्याल नहीं रहता और स्वाभाविक ही जब वह गुब्बारा अपनी ही हवा के दबाव से फूटता है, तब व्यक्ति हमेशा हताश या निराश हो जाता है। और....बाहर से किसी के द्वारा छोटी-सी भी कंकड़ लगने पर अगर वो फूटे तो वही हताशा क्रोध के ज्वालामुखी के रूप में विस्फोट होकर पहले खुद को और फिर दूसरे को जलाता है।

यह तो हुई उसकी बात कि जिसके पास खुद की फूंक का जोर है, लेकिन कई कितने ऐसे भी हैं कि जिनकी खुद

की बाजुओं में ज़रा-भी बरकत ना हो, ख़ुद की औकात तो चार फूंक मारने जितनी ताकत की न हो, फिर भी उधार लिये पंप से ख़ुद के अहम् को फुलाते रहते हैं। यहां हम सहज ही विचारें कि सामर्थ्य को पचाना कितना मुश्किल हैं? ख़ुद में कोई गुण हो, कोई विशिष्टता हो, तो उसकी कान्सियसनेस की स्प्रींग से हम बार-बार उल्टी सीधी छलांग लगाते ही रहेंगे। जबकि साक्षात्कार यानि कि–अंतिम अवस्था ! गुण, ऐश्वर्य या सामर्थ्य की पराकाष्ठा ! यह पचानी कितनी दुष्कर होगी, उसका ख्याल तो ऐसे साक्षात्कार जिसने पाया हो उसे ही आए ! हमें तो धन का साक्षात्कार यानि कि उसकी सहज झलक भी मिले तो हमारे हाव-भाव और हलन-चलन बदल जाता है, दूसरों के प्रति का व्यवहार बदल जाता है। पढ़ाई में अच्छे अंक आए हों, नौकरी में प्रमोशन मिला हो, राजनीति में एकाध मोहल्ले या जिले का चुनाव जीत लिया हो, अरे ! अच्छा प्रवचन किया हो, थोड़ा इम्प्रेसीव लेख लिखा हो, पद यात्रा में अन्य से थोड़ा अधिक चल पाये हों, तो बहुत रेयर ऐसा बने कि हमारा अहम् फूला ना हो ! पैसा, प्रतिष्ठा, रूप या सत्ता को पचाने में लगभग सभी ने ही हार खाई है। तो विचार करें कि प्रभुता को पचानी कितनी मुश्किल पड़ती होगी? सामर्थ्य या प्रतिष्ठा की प्राप्ति तो ठीक, लेकिन उस प्रतिष्ठा की अपेक्षा काकाजी का दासत्व देखें तो ख्याल आएगा कि किस कक्षा पर उन्होंने अपने अस्तित्व को विलीन कर दिया होगा ! उन्हें केवल महाराज के दर्शन ही नहीं हुए, बल्कि साथोसाथ अपरंपार ऐश्वर्य और सामर्थ्य भी प्राप्त हुआ था।

मानव मात्र का स्वभाव है कि ख़ुद जो दर्जे को भोगता होगा, उससे थोड़ा ऊपर चढ़ता है तब विनम्रता दिखाने सिर्फ सिर नीचे करता है, लेकिन अपने आपको तनिक भी नीचे झूकने नहीं देता।

काकाजी तो साक्षात्कार के बाद बापा की मर्जी, प्रसन्नता और समय की जरूरत–ये सब कुछ समझ कर ख़ुद पहले थे, उससे विशेष विनम्र हुए, रांक हुए, गरजु हुए, अज्ञानी हुए, गरीब हुए। उनके आशीर्वाद से दूसरों के पास धन के ढेर हुए और ख़ुद तंगी में रहे ! दूसरों को गाड़ियाँ दीं और ख़ुद कई कितनी बार पैदल चले। उनके ही आशीर्वाद और कौशल से जिनके हाथ और सिर ऊँचे रहे, उनके पास भी ख़ुद ने दासभाव से सिर झुकाया और हाथ जोड़े। **दासत्व उनकी वाणी से अधिक वर्तन में विशेष प्रगट हुआ।** कुछ भी सामर्थ्य न हो और सयाना हो तो शांत रहे, पर दास तो मुश्किल से हो पाये। लेकिन सारी सामर्थ्य हो, सभी के अंतर ठीक से पहचानते हों, फिर भी उसके पास बुद्धू होकर रहना उसमें केवल सयानापन ही नहीं, प्रभु के संबंध की अनहद् महिमा और नैतिक शूरवीरता चाहिए। **काकाजी ऐसे शूरवीर गुलाम थे** !

ख़ुद साक्षात् गुणातीत स्वरूप थे, सो सच्ची गुणातीत साधुता की रीति,नीति व स्थिति के मुताबिक ख़ुद के गुरु को कभी भी भूले तो नहीं ही, लेकिन कभी गौण तक नहीं होने दिया। कितनी बार वे ऐसा कहते कि–'हमारे जैसे करोड़ों मुक्त इकट्ठे हो जाए, पू. बापा की धूल के बराबर हो नहीं सकते !' गुरु के ऋण का नमक उनके ख़ून के कतरे-कतरे में समाया हुआ था।

हृदय की विशालता–स्वामित्व अथवा तो अधिकार की भावना मानव सहज लाचारी है। स्व-प्रयत्न से तो ठीक, लेकिन किसी की मेहरबानी से या अचानक ही हमें कुछ मिला हो, तो वह बाँटने की बात तो एक ओर रही, बल्कि दूसरे की जानकारी में ना आए या पता भी ना चले ऐसी चालाकीभरी सावधानी हम रखते होते हैं। कोई चीज़, वस्तु या पैसा तो ठीक, लेकिन कोई जानकारी या ख़बर भी दूसरे को देने में भी हमारी जायदाद मानो लुटी जाती हो ऐसा स्वार्थभरा क्षोभ हम अनुभव करते होते हैं। इसकी बराबरी में काकाजी का जीवन पारदर्शकता की परखनलीरूप था। एक प्रभु के सिवा उनके जीवन में कुछ भी निजी, अपना या प्यारा नहीं था। मालिकी के हक की मानव सहज बीमारी के जंतु उनके प्रभाचक्र में कभी भी प्रवेश ही नहीं कर पाए थे। साक्षात्कार से पहले तो दिलदार थे ही, लेकिन उसके बाद तो वे विशेष दिलावर बन गए थे। ख़ुद को जो कुछ भी सहज अच्छा मिला उसे आपस में बाँटने वे मानों अधीरे और जल्दबाज बन जाते। फिर वह लक्ष्मी हो,कीर्ति, हो, व्यक्ति हो, सत्ता हो या प्रभुता हो ! ईशावास्य उपनिषद् का श्लोक 'ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं' वह वे केवल बोलते ही नहीं थे, पल-पल जीते थे।

ख़ुद के सगे या साथीदार के प्रति की उनकी वफादारी या प्रमाणिकता ऐसी कि ख़ुद को जो मिला वह जब तक साथीदारों को ना मिल जाए तब तक ख़ुद का ही जैसे कुछ खो जाने का गम लगा रहता हो ऐसे वे बेचैन रहते। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें वह मिले उसके लिए ख़ुद अधिक प्रयत्नशील रहते और उसमें सफल होते तो धन्यवाद ख़ुद को नहीं, प्रभु को और गुरु को देते और....जिनके लिए वे यह सब करते वे ही उपेक्षा या अपमान करते, तो कर्ताहर्ता भी वे अपने प्रभु को मानते और सेवकों के लिए तो केवल प्रार्थना ही करते। बाह्य दिलेरी तो हम भी दिखा सकते हैं, लेकिन ऐसी छुपी दिलेरी तो केवल महसूस ही करी जा

सकती है। **'सहन करना वह भी है एक सुनहरा मौका'** यह वे कुछ यूं ही नहीं बोलते थे। उन्हें कुछ पता हो, जो हमें गुप्त रखना हो, वह भी वे सहज व हमारे आश्चर्य में खुले में बोल देते। बोल देने का हेतु हमें नीचा दिखाने नहीं, बल्कि संकुचितता के दायरे में से हमें बाहर निकालने का था। कुएं के मेढ़क को विशाल सागर की सैर करवाने का था, गींगे को गटर के बदले इत्तर का स्वाद चखाने का था। अपनी भूल का इकरार करना तो एक तरफ रहा, लेकिन हम दूसरे को अरे ! स्वजन को भी उसका ख्याल मात्र ना आए उस कक्षा पर खामोश और चौकन्ने रहते हैं। जबकि काकाजी तो कई कितनी बार **'हमने करी –वह भूल तुम नहीं करना'** यूं कह कर खुद की ही मिसाल देकर हम सभी को जाग्रत रखते। **उनकी ऐसी दिलदार गरिमा की बराबरी में हमारी घुन्नी हरकतें कैसी गरीब और हास्यास्पद लगती हैं?** अगर हमें उसकी सहज भी कल्पना हो, तो हम हमारे आस-पास उत्साह, उमंग से निर्दोष आनंद किल्लोल करने लगें। सागर होने के लिए केवल गहरे होना ही आवश्यक नहीं, लेकिन विशाल होना अनिवार्य है। यह अनिवार्यता काकाजी में सहज और सर्वश्रेष्ठ थी।

मनुष्य जीवन तो नाशवंत है। समय शाश्वत् है। हमारे सत्कर्म और बड़े पुरुष के साथ का हमारा दिव्य संबंध ही हमारे जीवन में शाश्वत्ता का सेतु बनाता है। काकाजी का जीवन ऐसी दिव्य शाश्वत्ता का एक सनातन और चिरंजीव सेतु है।

('अक्षरधाम' सत्संग पत्रिका के सौजन्य से)

सो, **3 फरवरी 1952 का मंगलकारी दिन** तो सारे गुणातीत समाज के लिए कभी ना भूलने वाला दिन....क्योंकि इसी दिन गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को साक्षात्कार करा कर सत्संग के पूरे बगीचे की बागडोर सौंपी.....1948 में नंदाजी को उत्तर भारत में स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने आशीर्वाद दिए....गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प से प.पू. काकाजी ने पू. गुरुजी को निमित्त बनाकर अनथक् परिश्रम से वो संकल्प साकार करा और 3 फरवरी '94 के ऐतिहासिक दिन यमुना तट पर अक्षरपुरुषोत्तम महाराज विराजमान हुए। साथ ही प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती का 'गुरुभक्ति यज्ञ' का भी स्मृति दिन......

'दिल्ली मेरा और मैं दिल्ली का'–प.पू. काकाजी के मुख से निकला यह मार्मिक वाक्य जहाँ एक ओर श्रीजी महाराज के–**'गढडा मेरा और मैं गढडा का'** की स्मृति कराता है, वहां दूसरी ओर दिल्ली के मुक्तों के प्रति के विशेष अनुग्रह, परिश्रम और प्रेम का अद्भुत दर्शन कराता है।

मनभेद छोड़कर, मतभेदों में झुक कर हमेशा मिलजुल कर सत्संग के व व्यवहार के क्रियायोग करते रहें, पर क्रियारूप ना हो जाए इसकी अब हम खूब जाग्रतता रखें....दिल्ली के समाज का विकास हो वह काकाजी का अभिप्राय था और सेवक सब सच्चे साधु बनें वह उनकी जीवनभावना थी.......प.पू. काकाजी के अभिप्राय और यह भावना सर्वोत्कृष्ट रूप में दृढ़ हो ऐसी 3 फरवरी के मंगलकारी दिन भगवान् स्वामिनारायण व सर्व गुणातीत स्वरूपों के चरणों में अन्तर की अभीप्सा !

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

✡ **भक्तवत्सल प.पू. गुरुजी** पिछले वर्ष 1999 में 2 से 7 दिसम्बर की शुरुआत में अमदावाद पुराने जोगी प.भ. पकाई साहेब के दामाद प.भ. जयेशभाई पारिख की तबियत देखने के लिए गए थे। **प.भ. जयेशभाई** को केन्सर था। सो, पू. पकाई साहेब के सम्बन्ध से उनके प्रति एक लगाव के वश प.पू. गुरुजी उन्हें खास देखने के लिए गए।

गुरुहरि काकाजी महाराज के संबंध से प.भ. पकाई साहेब के प्रति प.पू. गुरुजी को वैसे भी एक अलग ही लगाव-आदर है। दिल्ली के केन्द्र की शुरुआत करने में पकाई साहेब द्वारा निर्दोषबुद्धि से करी सेवा को कभी भी भूलाया नहीं जा सकता। इसी बात से भावना वश यूं कहें कि अंत समय में प.भ. जयेशभाई को दर्शन देने ही गए थे, क्योंकि प.पू. गुरुजी के दिल्ली वापिस आने के पन्द्रह दिन बाद तो वे अक्षरधाम निवासी हो गए !

प्रभु उनके परिवार को यह आकस्मिक दुःख सहने का अमाप बल दें और प.भ. जयेशभाई ने तो दिल्ली सत्संग समाज के आत्मीय प.भ. पकाई साहब के संबंध से ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के श्रीचरणों में ही स्थान पाया होगा.... समस्त दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से उन्हें भावसभर श्रद्धांजली !

प.पू. गुरुजी जब अमदावाद थे, तो वहीं उन्हें पता चला कि **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** की तबियत ज्यादा खराब होने

के कारण उन्हें मुंबई अस्पताल में एडमिट किया गया है। सो, **अमदावाद से ही मुंबई फ्लाईट से एक दिन के लिए प.पू. गुरुजी प.पू. स्वामिजी के दर्शन करने गए।** फिर वापस लौटकर दो दिन अमदावाद रुक कर भक्तों को अपनी परावाणी का रसपान करा कर 6 दिसम्बर को वल्लभविद्यानगर गए और एक रात ब्रह्मज्योति रुक कर, **प.पू. पप्पाजी** व **प.पू. साहेब** का दर्शन करके दोपहर को प्रसाद लेने के बाद प.भ. घनश्यामभाई अमीन के घर से होते हुए वडोदरा के लिए निकले।

शाम को करीब पाँच बजे वड़ोदरा में हमारे पुराने जोगी–**पू. भीखाकाका** के घर प.पू. काकाजी के प्रासादीक स्थल का दर्शन करने गए। यह वही पू. भीखाकाका का घर था, जिन्होंने भयंकर विरोध के समय संतों का खुल्ला पक्ष रखा था। संस्था से अलग होने के बाद वडोदरा में जब एक भी सत्संगी का घर ऐसा नहीं था जो संतों को पानी भी पिला सके, उस समय पू. भीखाकाका का एकमात्र **पहला आत्मीय परिवार** था, जिन्होंने संतों का सम्मान रखा और **इसी घर में झूले पर बैठ कर प.पू. बापा की मूर्ति के सम्मुख प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को 1968 में आशीर्वाद देकर दिल्ली आने की आज्ञा करी।**

प.पू. गुरुजी व साथ गए मुक्तों ने उस जगह का दर्शन किया–सारी स्मृतियाँ मानों ताजी हो गई और सभी को वहां प.पू. काकाजी की हाजरी का अहसास भी हुआ जिससे कि पू. गुरुजी के साथ-साथ सभी की आँखें नम हो गईं। पू. भीखाकाका के घर से फिर वडोदरा–प.भ. जयेशभाई के यहाँ सभी ने प्रसाद लिया और रात की राजधानी से निकल कर 8 दिसम्बर को वापिस दिल्ली आ गए......

✡ हर साल की तरह इस बार भी 31 दिसम्बर, 99 की रात को अनिर्देश में भजन-प्रार्थना-धून्य तथा वीडियो कैसेट द्वारा प.पू. काकाजी की मूर्ति के दर्शन का प्रोग्राम रखा था..... इस बार नई सदी–सहस्राब्दी की विशेषता होने के कारण दिल्ली व पंजाब के आत्मीय परिवारों का भक्त समुदाय अधिक संख्या में उमड़ पड़ा था..... संतों, आशिष व छोटे बच्चों ने मिलजुल कर अक्षरधाम-चिदाकाश का दृश्य खूब मेहनत व भक्तिभाव से बनाया था...... ऐसा लगता था जैसे बादलों से श्रीजी महाराज व गुणातीतस्वरूप धरती पर अवतरित हो रहे हों.... थर्मोकोल के रंग-बिरंगे स्टार्स, बोल्स व 2000 मिलेनियम लिखा हुआ बहुत ही सुशोभित होकर मन को सहज लुभा रहा था। प.पू. गुरुजी सारा दृश्य देखकर अत्यन्त राजी हुए...... भजन-कीर्तन के बाद प.पू. गुरुजी ने बताया कि प्रगट के भक्तों को तो रोज मिलेनियम....... यूं लगातार एक घंटे का सत्संग का लाभ देकर नई सदी में सभी में उमंग-उत्साह भर दिया.... सभी अपने आपको खूब फ्रेश व हल्का महसूस कर रहे थे। सभी ने प.पू. गुरुजी के मुताबिक प्रभु के बल से जीने का मन ही मन दृढ़ निश्चय किया।

रात को प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी ने 20 मिनिट सामूहिक धून्य कराई..... फिर बड़े पर्दे पर सभी भक्तों को प.पू. काकाजी के दर्शन हुए। प.पू. काकाजी की चाल, मस्ती, लुभावनी मूर्ति देखकर सभी भक्तों की आँखें नम हो गईं। नए संबंध में आए भक्त तो प.पू. काकाजी की मूर्ति में जैसे खो गए कि ओहो ! प.पू. काकाजी ऐसे थे....

12.00 बजे नई सदी की पहली आरती प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में हुई... यूं हर एक की नई सदी की शुरूआत ठाकुरजी के दिव्य अद्‌भुत दर्शन व प.पू. गुरुजी के मंगलकारी निश्रा में हुई.... प.पू. गुरुजी द्वारा करी कथावार्ता के मुद्दों से दूर बैठे हरिभक्त भी लाभान्वित हो सकें इसी भावना से उन्हें नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं..... नव वर्ष-नई सदी की हर पल आप सभी के लिए हर प्रकार से कल्याणकारी-मंगलकारी हो यही शुभकामनाओं सहित हार्दिक जय स्वामिनारायण.......

✡✡✡

31 दिसम्बर, 1999

12 बजे नया साल खुलेगा–जो हमें नई सहस्राब्दी में, नई शताब्दी में, नए दशक में ले जाएगा। उससे पहले–ये आज जो डेकोरेशन देख रहे हैं वह बहुत अच्छा करा है..... सो, ये आशिष ने–जो उम्र में छोटा है, लेकिन बड़ी समझदारी से ये सारा कन्सेप्ट बनाया है, उसे मिलेनियम भेंट देनी है....

पहले, एक मुद्दे की बात करता हूँ कि यह आर्टीकल हम पढ़ भी जाएंगे, लेकिन इस बात का स्वीकार करके जब तक हम अपने आप में बदलाव नहीं लाएंगे; तो कहते हैं न कि 'वी आर ऑन धी स्क्वेर नम्बर वन अगेईन !' यह बात मैं कई बार दोहरा चुका हूँ।

देखो, असल में तो मैं आप लोगों को भेंट देने वाला था। मैंने इनाम नहीं–प्राईज निकाला था कि जो हसबैण्ड और वाईफ एमिकेबली रहते होंगे इनको प्राईस दिया जाएगा......पर, एक भी कपल मेरी नज़र में ऐसा नहीं आया ! देखो, इससे फर्क क्या पड़ेगा कि आप कहते हो ना कि हम ये संतों के पास जाते हैं, मंदिर जाते हैं; फिर तुम्हारे इर्द-गिर्द रहते हुए ही सोचेंगे कि इनका यूं सत्संग में जाने का फायदा

क्या? तुम कितनी ही बड़ी-बड़ी बातें करो कि हमारे काकाजी ऐसे हैं, पप्पाजी ऐसे हैं, स्वामिजी ऐसे हैं– किसी को असर नहीं करेगी। हमारे अन्दर जो चेइन्ज आएगा, उससे दूसरों को असर पड़ेगी और फिर तुम्हें कहना भी नहीं पड़ेगा कि हमारे मंदिर चलो। वो अपने आप आएंगे ।

तो अभी जो पढ़ रहे हैं ना वो बात भी ऐसी है। हाँ, मैं एक बात मानता हूँ कि **हर एक के बस की यह बात नहीं है।** फिर भी महाराज ने एक बात कही कि **किसी को** भी यह बात पकड़ में आ गई-समझ में आ गई तो उसका बहुत बड़ा अच्छा होता है। इस हेतु से यह पढ़वा रहा हूँ।

........अभी-अभी मैंने पढ़ा है कि हार्ट सर्जरी में आगे जाकर अब की तरह छः-सात इंच का चीरा नहीं करना पड़ेगा। रोबोट एक सुराख द्वारा छाती में जाएगा, वो सारा डायोग्नाईस कर लेगा और ऑप्रेशन करके बाहर निकलेगा। आज ये बात कैसी अजीबोगरीब जैसी लगती है ना? कल्पना भी नहीं कर सकते। ये बात मुझे डॉ. माण्डके ने वहां भी करी थी कि बस एकाध साल की देरी है। अब इतना लम्बा काटना नहीं पड़ेगा। इतना छोटा-सा सुराख होगा। देखो, ये बात कैसी आश्चर्यकारक लगती है। अभी लगती है, लेकिन चार-पाँच साल के बाद? भले वो टेक्नीक को हम जानते नहीं, पर ऐसा हो जाता है वो मान लेते हैं न? मन ने मान लिया है कि सायन्स इतनी स्पीडीली एडवान्समेन्ट करती रहती है, सो हो जाएगा। फिर भी अजीबोगरीब लगती है यह बात !

पहले तो हार्ट सर्जरी का सुनकर ही दूसरा हार्ट अटैक आ जाता था। अभी तो कोई कहता है कि ऑप्रेशन करना पड़ेगा, तो प्रॉब्लम सिर्फ पैसों का रहा है। बाकी अब यह खतरा नहीं कि जिन्दे रहेंगे या नहीं। पहले तो मुश्किल से 10% ऑप्रेशन थियेटर में से जीवित वापिस आते थे। अब 99% केस रीकवर हो जाते हैं। देखो इतनी एडवान्समेन्ट हो गई है... कॉमन हो गया है। आजकल तो जिसको भी पूछो तो कहेगा–एनज्योग्राफी कराई है, डॉक्टर ने कहा हुआ है कि बाईपास सर्जरी करानी है। जैसे टॉन्सिल्स का ऑप्रेशन–वैसा अब लगता है कईयों को तो।

कॉम्प्यूटरर्स द्वारा भी जो चीजें आती हैं, वो दिमाग में ही नहीं बैठती कि कैसे होता है? लेकिन हो जाती है। बड़े-बड़े हिसाब किताब, डॉक्यूमेन्ट्स फटाफट तैयार हो जाते हैं।

..... यूं ही अक्षरब्रह्म की एन्ट्री से गुणातीत भाव में रहते पुरुषों काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, प्रमुखस्वामी महाराज, महंत स्वामी–इनके माध्यम से महाराज ने एक ऐसी एड्वान्समेन्ट कर दी है कि इनके साथ दिव्यभाव का हमारा एक अखंड संबंध हो जाए–रेपर्ट हो जाए–इनके प्रति एक निर्दोषभाव स्थापित हो जाए, हम ओटोमेटीक माया से परे हो जाएंगे। हमें सद्भाव रहता है, लेकिन वो अखंड नहीं रहता। कई बार सद्भाव रहता है, पर वो सिर्फ बोलने में ही रहता है। भीतर में शंका-आशंका, तर्क-वितर्क-कुतर्क, डाऊट रहता है।

यहाँ एक इक्वेशन समझ नहीं आएगा कि भई इनके प्रति सद्भाव रखो, हम निर्दोष हो जाएं–वो कैसी बात है? इनके प्रति दिव्यभाव रखें, हम दिव्यता को पा जाएं–वो कैसी बात है? कैसे होता है–वो हम समझ नहीं पाएंगे। पर, होते दिखाई पड़ा है। शास्त्रों ने भी यह बताया है। मैंने कई बार बताया है कि जो रीलेशन अर्जुन का कृष्ण के साथ था, वो कितने ही ऊँचे आदर्श अपने में रखे हुए युधिष्ठिर वगैरह थे –लेकिन कृष्ण के साथ युधिष्ठिर की मूर्ति कोई मंदिर में दिखाई नहीं पड़ेगी। जबकि अर्जुन कैसा ही था, कृष्ण के प्रति यदि उसे कोई सन्देह नहीं था, तो आज नारायणस्वरूप अर्जुन की मूर्ति कृष्ण के साथ लगी हुई दिखाई पड़ती है। ये देखते भी हैं, फिर भी इस रास्ते को मानने के लिए हम तैयार नहीं होते हैं....

हाँ, यहाँ फर्क जरूर करा हुआ है। हम जैसे जो हैं वे– 'संत' हैं। काकाजी हैं, पप्पाजी हैं, स्वामिजी हैं–वे **'अतिशय बड़े'** संत हैं। यहाँ फर्क पड़ जाता है। यह बात भले हम मानें– ना मानें। हम नहीं मानेंगे तो भगवान किसी में से बोल जाएंगे। एक दिन मैं बड़ा ताज्जुब हो गया। अपने यहाँ **आई.पी. सिंह साहेब** आते हैं। उन्होंने एक दिन बात करी कि सेवकों की भी वेव्ज़ को रीसीव करने की कैपेसिटी तो होनी चाहिए, तब गुरु उसको कुछ दे पाएगा। मैं बोलने ही जा रहा था, पर उससे पहले वो खुद बोले–हाँ, कोई जोगी बड़ा हो; सेवक रीसीव ना करे, फिर भी अपनी ताकत से वो अपने आन्दोलन टच करवा देगा। फर्क बता दिया ना उन्होंने? इनको महाराज ने कहा **वड़वानल अग्नि जैसे संत** ! वो खारे जीव को भी मीठा करें ! वो काकाजी की ताकत थी, पप्पाजी की है, स्वामिजी की है। इनके प्रति जिन जिन्होंने दिव्यता रखी, वो सब ऐसी दिव्यता को पाए। काकाजी कहते थे ना कि शास्त्रीजी महाराज के प्रति मुझे कभी-सपने में भी यह विचार नहीं आया कि स्वामी ने ऐसा क्यों करा? **वो संबंध हमें ऐसे संतों के साथ करना ही पड़े–यदि हम चाहते हैं कि ये गुण हमें बख्शिश में चाहिये।** हम साधन तो कोई कर ही नहीं पाएंगे....

ये कृष्ण की बात हुई। राम के प्रति ऐसी भावना, ऐसा दिव्यभाव रखने वाला बन्दर ! कोई मानव गिना? वो हनुमान

राम स्वरूप बना। आज हम उसका पूजन करते हैं। श्रीफल चढ़ाते हैं, तेल चढ़ाते हैं। वो आसान लगेगा, लेकिन कभी विचार किया कि **मानवस्वरूप में जो परब्रह्म तत्त्व उसको वो बंदर ने पहचाना** ! इसलिए वो पूजा जाता है।

तो कहने का मतलब वो कि–हम चाहे कैसे भी होंगे, **हमारे अन्दर चाहे कितनी ही शॉर्टकमिंग्स होगी, कितनी ही डिस्क्रीपेन्सीस होगी, लेकिन ऐसे पुरुष में हमें सम्यक् निर्दोषभाव होगा, तो वो हमें निर्दोष कर देगा।** लेकिन वहां हमारा डाऊटिंग माईन्ड बीच में आ जाता है।

.... किसी तरह यह बात समझ में आ जाए इसलिए काकाजी, पप्पाजी ने सारे जीवन यही बात करी। बस, **ये रेडिकल चीज़ हमारे दिमाग में फिट हो जाये ना, तो 99 प्रतिशत अपना काम हो गया।**

देखो, आज जो ये हम समाज देख रहे हैं वह एक परिवार जैसा है–गुणातीत समाज ! वो काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका ने साथ रहकर शुरुआत करी उसका फल है।

......आज यहां जो भी बैठा है इनमें से किसी को किसी ने भी पूछा होगा कि कहां जा रहे हो? तो उसने यह नहीं कहा होगा कि 'स्वामिनारायण मन्दिर' जा रहे हैं; कहा होगा– 'हमारे मंदिर' जा रहे हैं। **यह इस मंदिर की विशेषता है।** जबकि और कहीं जाओगे तो कहोगे–झंडेवालान मंदिर जा रहे हैं, कात्यायनी मंदिर जा रहे हैं, बिरला मंदिर जा रहे हैं। देखो, तुम खुद भी बोलते हो, पर तुम्हारी समझ में यह नहीं है। अभी ये अनिल, **हरनाल साहेब** को लेकर आया है। लेकिन मैं पक्का मानता हूँ कि यही कहा होगा कि हरनालजी आप हमारे मंदिर जरूर आना। ऐसा ही कहा होगा–नेचरल निकल जाता है यह। यह कितना बड़ा काम हुआ है–ज़रा ठंडे दिमाग से विचारो तो पता लगे। यह कैसी बड़ी घटना अपने जीवन में बन गई है–गौर से सोचें। ये मिलेनियम में दाखिल हो रहे हैं, तब अपना माईन्ड जो चलता है उसमें से बाहर आकर अब **इसकी यह विशेषता को समझें।** इसलिए मैंने ये सारा लिख करके दिया हुआ है.....

ये मेरे एक फोन पर पंजाब से इतनी ठण्ड में ये सब आ गए–वो कितना अपनापन होगा? मैंने कहा–मिलेनियम में जा रहे हैं। अगली सदी में तो हम होंगे–नहीं होंगे। कोई कहाँ पड़ा होगा, कोई कहां। तो अबकी सब साथ में नई सदी में कदम रखें......

मैं आज ही किसी से बात कर रहा था कि मुझे पहले से काकाजी, पप्पाजी के बारे ये बात बैठ गई थी कि वे चैतन्यस्वरूप हैं–भले ही मुझे समझ नहीं आते। मेरे मन में भी कितने ही बवंडर आए, लेकिन इनसे अलग हो जाने का विचार मुझे कभी नहीं आया। मैंने अबकी पप्पाजी को–स्वामिजी को कागज़ लिखा, तो मैंने यही लिखा है कि 63 साल तो हुए, तो आगे जब भी जहां रखो–जहाँ आप हों वहां रखना। ये एक ऐसा आस्तिकभाव होता है।

उनकी एक योजना थी। ये आस्तिकभाव होगा तो एक उमंग रहेगी कि ये जो हो रहा है, कर रहे हैं उसमें हम लग पड़ें। **भीतर में नास्तिकभाव पकड़े रखेंगे तो सारा काम मैकेनिकल जैसा लगेगा और फिर कहेंगे कि कुछ नहीं हुआ है।**

देखो, **काकाजी ने भी कहा है कि एक नए युग का आरम्भ होने वाला है। उसमें आस्तिकभाव ! काकाजी ने कहा है, सो होने वाला है।** 'यूं तो वे कहा करें'–वो आस्तिकभाव नहीं। **जो होने वाला है उसमें हमें सेवा लूट लेनी है।** जिन्होंने कृष्ण को सपोर्ट करा वो भगत बोले गए, जिन्होंने खींचने की कोशिश करी वो असुर बोले गए और वो कि भई अपने को कुछ समझ नहीं आती है, देखो क्या होता है, यूं नरो वा कुंज रोवा जो रहे–वो चरवाहे बोले गए।

कई ऐसे हैं कि भई हमें तो इसमें पड़ना ही नहीं है। अरे ! तुमने मंदिर को परखा नहीं है क्या? क्या पड़ना नहीं है? अपने फेमिली पर कोई बात आ पड़े तो कहेंगे कि पड़ना नहीं है? तो वो चरवाहे बोले गए।

दरअसल ऐसे बड़े संत जो कोई योजना लेकर आते हैं ना? वो अपने भेजे में नहीं उतरे ऐसी ही लेकर आएंगे। आज भले हम महाभारत की प्रशंसा करते हैं। लेकिन उस समय भी ऐसे चौधरी होंगे ना ! कि ये युद्ध करवाने की क्या जरूरत है? उससे कोई मोक्ष थोड़े होता है? वो भगवान कृष्ण की मर्जी थी, उसे अर्जुन को युद्ध करवा कर मोक्ष देना था। **जिस समय जो स्वरूप की जैसी रीति, नीति और स्थिति– उसमें हम जुड़ जाएं वो मोक्ष का रास्ता है।** क्या कोई भी जगह पर ऐसा हो सकता है कि भई वॉर करो और मोक्ष होगा–प्रकृति से परे हो जाओगे। अर्जुन हुआ !

इस बात को मैं कई बार अलग ढंग से समझता हूँ कि मानो पेट में दर्द होझ्रदस्त हुए हों और हमें कोई घी दे तो खायेंगे? नहीं, लेकिन वैद्य वो फांकी-पुड़िया देते हैं–आयुर्वेद की और घी के साथ खाना कहेंगे तो खायेंगे न?

इसी तरह क्रिया वो ही, लेकिन संत की आज्ञा रूपी फांकी अंदर आ गई। जिसका हमें डर रहता है कि बिगड़ जाएगा, वह उसी से ठीक हो जाएगा। देखो, निहाल होने का

आसान तरीका कहो–रहस्य कहो–करामात कहो– टैक्नीक कहो, यह है। ब्रह्मप्रवाह पढ़ोगे तो पता चलेगा कि पू. काकाजी ने लिखा–तुमने मेरे जैसे मिस्टीरियस व्यक्ति का भरोसा करा, तुम निहाल हो गए।

पर, हमें राग-द्वेष, मतभेद-पूर्वाग्रह, प्रीकन्डीशनिंग कि– ये तो है ही ऐसा–इसके साथ कितना ही करो, ये मेरे साथ ऐसा ही करेगा–ऐसा रहता है। भले वे ऐसे ही रहेंगे, लेकिन प्रभु तो हमारे हो जाएंगे ! अपनी गरज से तो करें। पर इस बात का विश्वास होगा, तो करेंगे।

कई बार अपने माईन्ड को ऐसा रहता है कि सब सेटिंग कर देना है ना? इसलिए साधु ऐसी बातें करते हैं। बल्कि यूं समझे कि मैं ये बात को लेकर लग पड़ूंगा न, तो सामने वाली व्यक्ति भले नहीं सुधरेगी, लेकिन मेरा काम तो काकाजी कर देंगे। **सुहृद्‌भाव रखेंगे तो निष्काम धर्म प्रभु हमें बख़्शिश में दे देंगे।** सामने वाले का जो होना होगा वो होगा। लेकिन अपना तो काम हो जाएगा। बस **यह विश्वास लेकर बैठ जाना है। तब नए युग का प्रारम्भ होगा।** लेकिन वहाँ अपना डाऊटिंग माईन्ड, तर्क-वितर्क करता है कि मेरे सुहृद्‌भाव रखने से यह कैसे हो जाएगा? हमें समझ नहीं आती, पर थोड़ा तो विश्वास रखें।

हम क्या करते हैं कि आज यह बात सुनी, तो पक्का कर देंगे। **महाराज भी देखेंगे न कि हमने कितनी सिनस्यरली पकड़ कर रखा?** तो, मिलेनियम में मेरी इस बात को मानना।

इसमें मैंने लिखा है कि मुझे तुमसे खूब लगाव है– क्योंकि तुम काकाजी के हो, इसलिए आज यह रहस्य बताया है। वर्ना कितनी बड़ी चीज़ मारी जाती है।

ये अभिषेक जैसी समझ रखना–मुझे ये लड़का खूब पसन्द आता है। मैंने इसकी एक चीज़ देखी है। मैं नोट करता हूँ, मैं जानबूझ कर उल्टी-सुल्टी बात भी कर देता हूँ उसके पास। पर, मैंने इसकी एक चीज़ देखी। गुरुजी कहें वो करना– बस ! उसको समझ में नहीं आती–ऐसा नहीं है। समझता भी है कि गलत है, पर मुझे करना है। बस ये ही चीज़ें अपना काम कर जाती हैं। मन के बवंडर में, दूसरों की संगत में आकर उनकी बातों में आये तो फिर मुसीबत खड़ी ! जैसे कि मैं कह दूंगा शाम को जाना है, तू अभी कपड़े तैयार कर देना। जाना तो शाम को–कपड़े तैयार करके अब रखो ! मैं नोट करता हूँ कि जाकर पलंग पर मेरे कपड़े रख आता है। कई उसे कहते भी होंगे कि शाम को जाना है...... गुरुजी तो कहें अब से रखना, तू टाईम पर रख देना। इतनी क्या जल्दी है? यह बेचारा सोचता है कि गुरुजी ने कहा है कि अभी कर देना है, नहीं करूंगा तो गुरुजी नाराज होंगे। वो पटाने की कोशिश में रहता है कि फ्री हैं तो अभी कपड़े निकाल दो ना। सारा जो ड्रामा चलता है वह मैं जानता हूँ........

दूसरी व्यावहारिक बुद्धि क्या? तो, ‘काकाजी ने आज मुझे ये बात करी है, कोई मेरे बारे जरूर कुछ कह कर गया होगा काकाजी के पास–इसलिए काकाजी ने ये बात करी। वर्ना आज ही इन्होंने क्यों बात करी?’ ये सारी व्यावहारिक बुद्धि है। पर, पू. काकाजी की यह बात को लेने से मेरा तो सुधार हो जाएगा, मेरा उद्धार हो जाएगा–**यह माने वह आस्तिकभाव** ! लेकिन हम हमारे उद्धार के लिए आते ही नहीं हैं। दूसरों के उद्धार के लिए ही आते हैं।

सम्बन्ध वाले मुक्तों और साथीदार निर्दोष और दिव्य हैं–यह नहीं माना जाएगा। आज हनुमान हमारे साथ नहीं हैं, इसलिए मूर्ति की पूजा करते हैं। अगर वो सच में मौजूद हों, तो कैसे मानोगे? उसे हम राम का स्वरूप मान पायेंगे? जब लंका जलाई होगी और पेड़ पर से जब फल खाएं होंगे– जो अभी पर्दे पर देखने में अच्छा लगता है अपने को, तब माना होगा सबने कि ये रामदूत पूजनीय हैं? स्वभाव-प्रकृति साथीदारों के दिखेगी ही। लेकिन फिर भी मानना कि वो चैतन्यस्वरूप हैं– **वो अपनी काकाजी के प्रति की भक्ति है** और इसलिए महाराज को वचनामृत में लिखना पड़ा है.......

प्रथम-71 में क्या लिखा है? कि ये जो सब बैठे हैं वो कोटि-कोटि सूर्य का प्रकाश जिसके पास फीका लगे ऐसे सारे ये एक-एक तेजस्वी मुक्त हैं। महाराज को तो इस बात के लिए कसम भी खानी पड़ी कि इस बात में ज़रा भी झूठ बोलता हूँ तो परमहंसों की सौगंध है। वो दूसरों के देखने में नहीं आएगा– ये चर्मचक्षु से नहीं दिखाई पड़ेगा। लेकिन खूब विश्वास से मानें कि कोटि-कोटि सूर्यों का प्रकाश जिसके आगे फीका पड़े ऐसे अक्षरमुक्त हैं। इस बात को लेकर के, **अपनी गांठे छोड़ करके मुक्तों के प्रति भावना बदल करके जीना शुरू करें वो सच्चा मिलेनियम** !

वो सच्चे नये युग की शुरूआत हम करें और इसकी शुरुआत अपने घर से ही करो। ‘चेरिटी बीगीन्स एट होम’। हस्बेन्ड-वाईफ के अन्दर भगवान को देखे, वाईफ-हस्बेन्ड के अन्दर प्रभु को देखे। आज तक का सब पूर्वग्रह भूल जाओ। ये करेंगे तो **महाराज बख़्शिश के रूप में** अपना काम कर देंगे।

प्रकृति अपनी टालनी है या दूसरे की? जिसे स्वयं की प्रकृति टालनी हो उसके लिये यह बात है। हाँ, दूसरों का ओप्रेशन आप करने आए हों तो बात अलग है। लेकिन जिसे

स्वयं की प्रकृति टालने की इच्छा हो उसका प्रभु कितना ही तिरस्कार करे-कटु-वचन कहें.....अरे ! तिरस्कार कटु वचन की बात तो दूर रही पर संत हमारी ज़रा-सी उपेक्षा करें, तो नापातोली हो जाती है कि ये जाकर बैठता है, तो काकाजी खुश-खुशाल दिखाई पड़ते हैं, हम जाते हैं तो हमारे सामने देखते ही नहीं। इनके तो यही चहेते हैं–यही इनके चमचे हैं...... वगैरह। पर, **मेरा मान टालने के लिए स्वामी ऐसा वर्तते हैं–काकाजी ऐसा वर्तते हैं– यूं माने वह इनको दिव्य माना।**

मैं सारा इसलिए पढ़वा रहा हूँ कि **नए मिलेनियम में हम इस नज़रिये से जीना शुरू करें।** सुखी हो जाएंगे हम। अपने आपको इतना हल्का महसूस करना शुरू कर देंगे और मुझे आशीर्वाद दोगे कि गुरुजी आपने करामात बताई तो हम सुखी हो गए।

कई ऐसे कहते हैं कि हम हैं ही बुरे, इसलिए साधु मेरे साथ ऐसे करते हैं। **यह भी दुःखी होने का एक प्रकार है।** हमारा कभी कुछ ठीक नहीं होने वाला कितना ही करो ना?– यह भी एक ब्रांड होता है.... मैं किस तरह सुखी हो जाऊँ इसलिए वे लगे हुए हैं, यूं माने तो किसी भी प्रकार न टले ऐसी प्रकृति हो, तब भी वो टल जाती है। ज़रा दो मिनिट पीछे मुड़ कर देखोगे तो ख्याल आएगा कि आज के दिन आप यहां हो सकते हैं क्या? वहीं होते तुम किट्टी पार्टियों में। उसके बजाय यहाँ कितने चुपचाप सयाने बन कर बैठे हो?

लेकिन तुम्हारी सबकी मुसीबत क्या है कि **बड़े सयाने बन कर यहाँ रहते हो, लेकिन घर में जाकर हल्ला-गुल्ला करते हो।** यहाँ कोई मान सकता है कि तुम घर में कैसे हो? लेकिन ये चलेगा नहीं। **ऐसा डबल रोल नहीं चलेगा......** हम काकाजी के हैं। काकाजी की निर्दोषबुद्धि ! मेरे कागज़ में काकाजी ने लिख दिया है कि मैंने तुम्हारे सारे चरित्र दिव्य माने हैं, तुम मेरे क्यों नहीं मानते? ऐसी निर्दोषबुद्धि की सेवा-किसकी की? संत की ! कृपादृष्टि परमेश्वर की हो जाएगी। यह बेचारा वैराग्यहीन है, उसमें वैराग्य तो है नहीं, विषयों में आसक्त है, उसे काम-क्रोधादिक बहुत परेशान करते हैं। **आदिक में सब आ जाते हैं।** अब इसका बेचारे का सब टल जाए। तो, दो-चार दिन के अन्दर वो सेट हो जाता है? अरे ! तत्काल टल जाते हैं। अब तो तत्काल टिकीट मिलने लगी है। कैसा भरोसा है इस बात का? वैसा हम मानते हैं क्या कि निर्दोषबुद्धि रखेंगे तो संत भगवान को कहेंगे कि टाल दो इसका। यूं मध्य 7 और मध्य-37 के मुताबिक रहेंगे तो प्रकृति से परे हो जाएंगे। प्रकृति से परे होने का ये आसान रास्ता बताया है, स्वभाव से परे होने का। लेकिन जिसको लगाव होगा ना, उसको यह बात पकड़ में आएगी। वर्ना तो-मेरे पर ही बात कर रहे हैं ऐसा लगेगा।

......संसार छोड़कर हम आए हैं, घर–बार छोड़ कर आप यहाँ बैठे हैं। तो अपनी छोटी-सी चीज़ छोड़कर जो बड़ी चीज़ पकड़नी है, वह क्यों गंवा रहे हैं? बस, इतना थोड़ा भी हम नहीं सोचते। हम यहाँ आए हैं सब कुछ छोड़ कर और जो पाना है वह गंवा देते हैं। तो कितना दर्द होता होगा साधु को– विचार करना। **सपोर्टीव बनना है बस। वे हमें जरूर निहाल कर देंगे।** इस बात का भरोसा रखना। भरोसा नहीं–खूब भरोसा रखना। हम प.पू. काकाजी के कहलाए जाते हैं–हुए नहीं है।

हम कहते हैं ना कि **काकाजी को पा जाना** है। **ये छोड़ेंगे तब पायेंगे ना?** तुम्हें ये करामात-टेक्नीक बता दी है। कोई ताला लगा हुआ होता है, चाबी नहीं होगी तो खुलेगा? कितनी ठोका-ठाकी करनी पड़ेगी? पर, चाबी-करामात हाथ लग गई तो? फट् खुल जाएगा। पर, हमें नहीं खोलना है। यह भी एक ब्रांड होता है। **कई ऐसे भी होते हैं कि भले नहीं खुलता है, हमें नहीं खोलना है। इसका मतलब हमें नहीं करना है, गरज नहीं है।**

सो महाराज को कहना पड़ा कि **दादाखाचर** के घर के लोगों को हमें रखने की गरज है, तो मुक्तों का सब कुछ सहते हैं। अपनी प्रकृति को छोड़ दी है। हमें ऐसी गरज रखनी है। **काकाजी के दिल को ठेस नहीं पहुँचने देनी है।** बस, इतनी भी गरज रखी हो, तब भी हम निहाल हो जाएंगे। **इसी को लगाव बोला जाता है, बाकी तो नौटंकी है।**

बस, ये रखेंगे सो काम हो गया अपना। निर्दोषबुद्धि हर एक में–जो अपने यस मैन होते हैं उनमें रखनी है ऐसा नहीं। जो अपना विरोध करता हो उसके अन्दर भी। अब हमें यह सेवा करनी है। ये लेकर चलेंगे ना, तो काकाजी हम पर निहाल हो जाएंगे।

–प.पू. गुरुजी

✡✡✡✡✡

आभारदर्शन

अज्ञान-अधंकार में से नूतन वर्ष की मिलेनियम ऊषा प्रगट हो चुकी है....
आप सभी को नई सदी-सहस्त्राब्दी के हार्दिक जय स्वामिनारायण।
प.पू. काकाजी कहते हैं कि–'आनन्द करो, रे भई आनन्द करो; कौन मिला है.....'
प्रत्यक्ष स्वरूप मिले वही अद्‌भुत प्राप्ति–पूर्णाहुति !
नई सदी में पुराना ढांचा छोड़ कर, भूतकाल सदंतर भूल कर,
हमें मिले प्रगट गुणातीत स्वरूप के संबंध से,
हम निर्दोष और दिव्य हैं ऐसा मान कर,
दूसरों को भी ऐसी दृष्टि से देख कर, महिमा समझ कर सेवा करें;
तो जीवन में रोज नए वर्ष की उमंग-उत्साह से अपना संबंध दृढ़ होता जायेगा।
प्रगट के भक्तों का सही अर्थ में 'मिलेनियम' यही कहा जाएगा।
हम सभी के आधार साक्षात् गुणातीत स्वरूप प.पू. काकाजी महाराज
हमारी चैतन्य शुद्धि के लिए जिन प्रसंगों में से फिलहाल हमें गुजार रहे हैं,
उससे आप सुपरिचित हैं।
इस मौके पर,
सुहृद्‌भाव व सर्वदेशीयता के सिद्धान्त का ही प्रतिपादन करते हुए
सभी गुणातीत स्वरूपों ने जो बल व आशीर्वाद दिए हैं....
उससे बड़ों की सेरेछाया हमारे ऊपर होने का सम्यक् अहसास-दर्शन हुआ है
और
रक्षाकवचरूपी जो उष्मा व अपनापन दिया है, साथ व सहकार दिया है;
उसके लिए हम हमेशा उनके ऋणी रहेंगे।
आप–भक्तों ने भी
इस प्रसंग में अद्‌भुत आत्मीयता का जो परिचय दिया है,
मंदिर के लिए अपना व्यापार, नौकरी आदि से छुट्टियाँ लेकर,
किसी भी चीज़ की परवाह न करते हुए,
दिन-रात देखे बिना खड़े पांव जो योगदान दिया है,
वह भी भूलाया नहीं जा सकता।
कर्ताहर्ता, प्रवर्तक–नियन्ता प्रभु को ही मानकर,
प.पू. काकाजी के शब्दों में '**सर्वोपरि स्वामिनारायण**' की सत्ता को स्वीकार करके
माया को शांत करने भजन का ही शुद्ध शस्त्र लेकर,
प.पू. काकाजी के अनथक् परिश्रम को सार्थक किया है।
इससे भी अधिक– सुहृद्‌भाव व निर्दोषबुद्धि का अद्‌भुत परिचय देकर आप
प.पू. काकाजी के अन्तर की प्रसन्नता के अधिकारी भी बने ही हैं।
जैसे अपने परिवार में कोई विपत्ति आने पर एकजुट होकर लग पड़ते हैं,
उसी भावना से मौके पर की गई इस निर्दोषबुद्धि की सेवा के फलस्वरूप
प.पू. काकाजी सभी के भीतर शांति-शांति कर देंगे,
प्रारब्ध के कई ढेर पिघाल देंगे और..... इसे हम अनुभव भी करेंगे !

–योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

निमंत्रण

एक नई सहस्राब्दी—शताब्दी का—दशक का
नया वर्ष शुरु हुआ........
तो, आइए !
6 फरवरी 2000, रविवार की
मंगलमयी मिलेनियम ऊषा में **सुबह 9.00 से 12.00**
'अनिर्देश' मंदिर में
प्रसन्नवदन करुणाशंकर श्रीजी महाराज
एवं
सभी गुणातीत स्वरूपों की दिव्य निश्रा
व
प.पू. गुरुजी की सन्निधी में
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का **48वाँ साक्षात्कार दिन** मनाएँ
और
प.पू. काकाजी ने हमारे लिए जो परिश्रम करा उसे सार्थक करने
एक नए जोश—नई श्रद्धा—नई उमंग से कृतनिश्चयी बनें.......

—योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 1.2.2000	मंगलवार	—	एकादशी—व्रत, ब्र. स्व. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(2)	दि. 3.2.2000	गुरुवार	—	ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन एवं अशोक विहार (अनिर्देश) स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव
(3)	दि. **6.2.2000**	**रविवार**	—	**दिल्ली, अशोक विहार मंदिर में प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन मनायेंगे।**
(3)	दि. 10.2.2000	गुरुवार	—	बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन
(4)	दि. 15.2.2000	मंगलवार	—	प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(5)	दि. 16.2.2000	बुधवार	—	एकादशी—व्रत

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,